

ॐ

~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्

विषय- हिन्दी

दिनांक—07/07/2020 चंद्र गहना से लौटती बेर

~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी आर टी पर आधारित

जिंदगी हमें बहुत कुछ सिखाती है और हम तभी कुछ सीख पाते हैं जब हम इसके अनुसार चलते हैं जब हम थक कर हार जाते हैं तो हमारा सीखना भी वहीं पर रुक

जाता है इसलिए हम अपने आप को कभी थका हुआ न मानें और आगे ही आगे बढ़ते चलें

इंसान ने वक्त से पूछा, “मैं हार क्यों जाता हूँ?”

वक्त ने कहा- “धूप हो या छाँव, काली रात हो या बरसात, मैं हर वक्त चलता रहता हूँ। तू भी मेरे साथ- साथ चल, कभी नहीं हारेगा।”

प्यारे बच्चों, कभी नहीं हारने वाला इंसान ही जीवन में आगे बढ़ता है ।

आइए अब आते हैं अपने अध्ययन सामग्री पर

आज की कक्षा में हम काव्य-खंड में केदारनाथ अग्रवाल की कविता ‘चंद्र गहना से लौटती बेर’ कविता की आगे की एवं अंतिम कड़ी पढ़ेंगे।

चंद्र गहना से लौटती बेर

-- केदारनाथ अग्रवाल

सुन पड़ता है

मीठा-मीठा रस टपकाता

सुग्गे का स्वर

टें टें टें टें;

सुन पड़ता है

वनस्थली का हृदय चीरता,

उठता-गिरता,

सारस का स्वर

टिरटों टिरटों;

मन होता है -

उड़ जाऊँ मैं

पर फैलाए सारस के संग

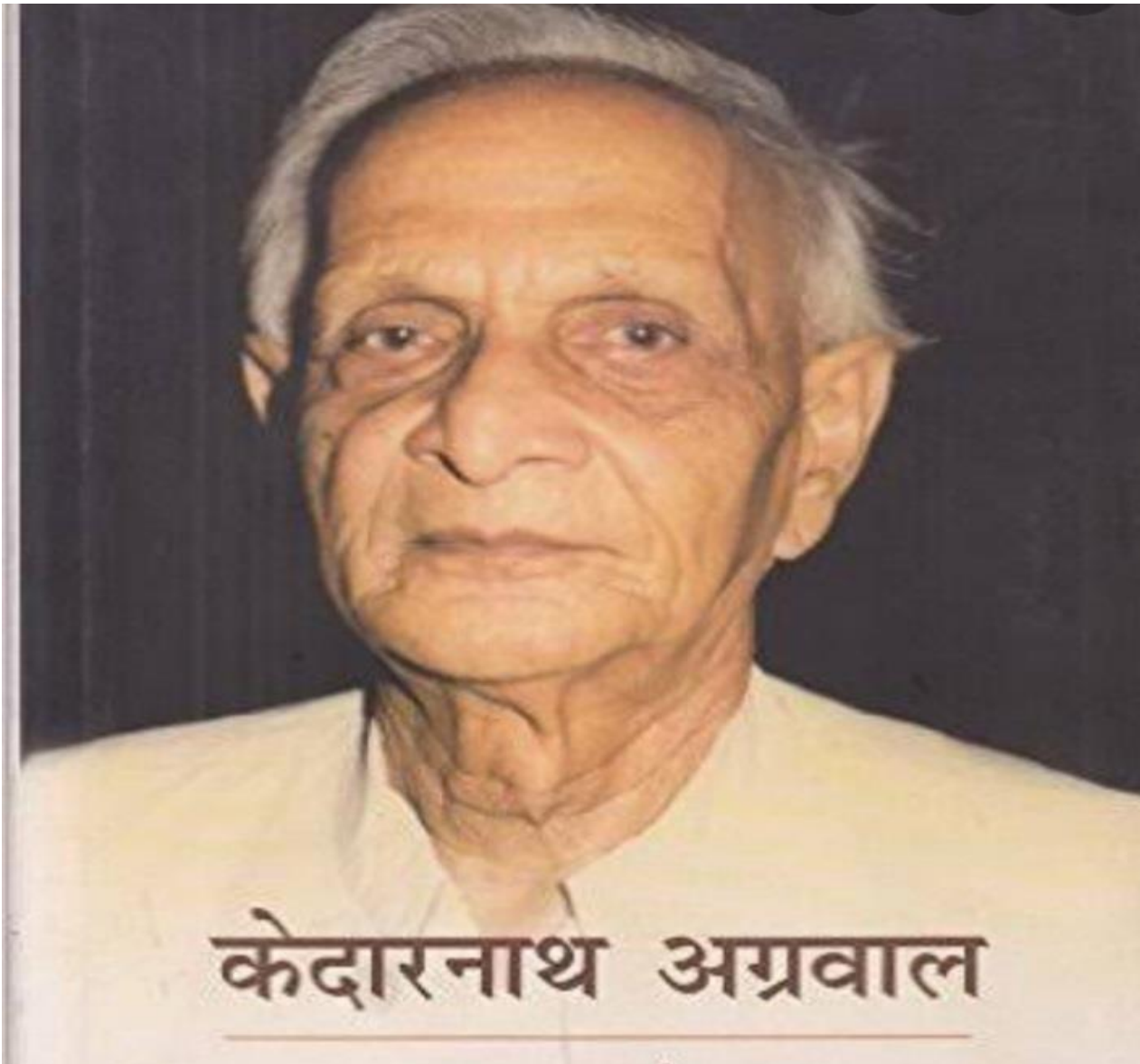
जहाँ जुगुल जोड़ी रहती है

हरे खेत में

सच्ची प्रेम-कहानी सुन लूँ

चुप्पे-चुप्पे।

छात्र कार्य-कविता लिखें व याद करें।



धन्यवाद



कुमारी पिकी "कुसुम"